

Padma Shri



DR. DHANANJAY DIWAKAR SAGDEO

Dr. Dhananjay Diwakar Sagdeo is the Chief Medical Officer of Swami Vivekananda Medical Mission, Wayanad, Kerala. The Mission was started for serving the less privileged tribal brethren in 1972. He has been working for their betterment of health and upliftment for almost 41 years.

2. Born on 16th August, 1956 in Nagpur, Dr. Sagdeo got his MBBS degree from Indira Gandhi Medical College Nagpur in 1980. While working in the rural areas of Nagpur, he realised the need of medical attention and other necessities required by the tribal people. So inspired by the works and philosophies of RSS, he wished to serve the less privileged and use his medical knowledge in areas where there was no doctor. Dr. Sagdeo came to Wayand in Kerala, which basically is a hilly district and 17% of the population constitutes of tribal.

3. Dr. Sagdeo started his service in 1980 with a small clinic with special focus on the needs of indigenous folks. Under the leadership of Dr. Sagdeo, the small clinic has now grown into 36 bed well equipped hospital (with free food and treatment for tribal) constituting laboratory, multispeciality clinics, ECG, Ambulance, mobile dispensaries, subcenters and a school in tribal concentrations and Swasthya mitra group. He was the first to discover Sick Cell Anaemia among the tribal of Wayand. He notified the government about his suspicion. Later from 1997-2001, under All India Institute of Medical Sciences(AIIMS), New Delhi pilot project was done for screening and managing the Sick Cell Anaemia (Sickle Cell Anaemia). As there is no cure for SCA, counselling and prevention of genetic transfer to the next generation is the only solution. Apart from medical attention, they need ways for sustaining their life. Various self-reliance projects like bamboo craft, tailoring unit and de-addiction centres are managed for tribals.

4. The motto of Dr. Sagdeo's life is 'Manava Sewa is Madhava Sewa'. He has been working 24x7 for the past 41 years towards the upliftment of tribal brethren by rendering them help in 5 fold aspects of their life, viz., Social(Samajik), Shiksha (Education), Swavalamban (Self dependence), Swasthya (Health) and Sanskar (Culture). Because of the dedicated work, the tribal brethren are now more health conscious. Superstition and distrust towards modern medicine and lifestyle, which was prevalent among them has been reduced to a large extent. The one teacher school project has helped achieving literacy in the younger generation. All these works and projects done solely with the aim of total development of the tribal population have been progressing positively.

5. Dr. Sagdeo's work has been recognised by various sections of the society. He has received awards from IMA, Rotary club, Lions club, Jaycees and several other organizations. He has been featured in local as well as national newspapers and magazines for his selfless and distinguished work.



डॉ. धनंजय दिवाकर सगदेव

डॉ. धनंजय दिवाकर सगदेव, वायनाड, केरल में स्वामी विवेकानंद मेडिकल मिशन में मुख्य चिकित्सा अधिकारी हैं। यह मिशन 1972 में पिछड़े जनजातीय समुदाय की सेवा के लिए शुरू किया गया था। वह लगभग 41 वर्ष से उनके स्वास्थ्य की बेहतरी और उत्थान के लिए काम कर रहे हैं।

2. 16 अगस्त, 1956 को नागपुर में जन्मे डॉ. सगदेव ने अपनी एमबीबीएस की डिग्री 1980 में इंदिरा गांधी मेडिकल कॉलेज नागपुर से प्राप्त की। नागपुर के ग्रामीण इलाकों में काम करते हुए उन्होंने महसूस किया कि जनजातीय लोगों के पास चिकित्सा और दूसरी जरूरतों की कमी है, इसलिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्य और विचारों से प्रेरित होकर उन्होंने वंचितों की सेवा करने और ऐसे इलाकों में अपने चिकित्सीय ज्ञान का उपयोग करने का संकल्प लिया, जहां कोई डॉक्टर नहीं था। वह केरल के वायनाड में आए, जो मूल रूप से एक पहाड़ी जिला है और वहां की 17 फीसदी आबादी जनजातीय है।

3. डॉ. सगदेव ने अपनी सेवा 1980 में एक छोटे से क्लिनिक से शुरू की और वहां के मूल निवासियों की जरूरत पर खास बल दिया। उनके नेतृत्व में यह छोटा सा क्लिनिक अब 36 बिस्तर वाले सुविधा-सम्पन्न अस्पताल में बदल चुका है जहां जनजातीय लोगों को निःशुल्क भोजन और उपचार मुहैया करवाया जाता है। इस अस्पताल में लेबोरेटरी, मल्टीस्पेशलिटी क्लिनिक, ईसीजी, एंबुलेंस, मोबाइल डिस्पेंसरी, सब सेंटर तथा जनजातीय बहुल इलाके में एक स्कूल तथा स्वास्थ्य मित्र समूह भी शामिल हैं। वह वायनाड की जनजातियों में सिकल सेल एनीमिया का पता लगाने वाले पहले डॉक्टर थे। उन्होंने सरकार को अपनी आशंका के बारे में बताया। बाद में 1997-2001 तक, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) के अंतर्गत, सिकल सेल एनीमिया की जांच और इससे निपटने के लिए नई दिल्ली पायलट परियोजना शुरू की गई। चूंकि इसका कोई इलाज नहीं है, इसलिए काउंसलिंग और अगली पीढ़ी तक आनुवांशिक अंतरण को रोकना ही इसका एकमात्र हल है। चिकित्सीय देखरेख के अलावा, उन्हें गुजर-बसर के तरीकों की जरूरत है। जनजातीय लोगों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए तमाम परियोजनाएं जैसे बैंबू क्राफ्ट, टेलरिंग यूनिट और नशामुक्ति केंद्र चलाए जाते हैं।

4. डॉ. सगदेव के जीवन का आदर्श है, 'मानव सेवा, माधव सेवा है'। वह पिछले 41 वर्षों से जनजातीय समुदाय के जीवन के पांच पहलू यानी सामाजिक, शिक्षा, स्वावलंबन, स्वास्थ्य और संस्कार में उनकी मदद करते हुए उनके उत्थान के लिए दिन-रात काम कर रहे हैं। उनकी लगन के कारण अब जनजातीय लोग अपनी सेहत को लेकर ज्यादा जागरूक हैं। आधुनिक दवाओं तथा जीवनशैली के प्रति उनके मन में जो अंधविश्वास और अविश्वास था, वह काफी हद तक कम हो गया है। वन टीचर स्कूल प्रोजेक्ट ने युवा पीढ़ी को साक्षर बनाने में मदद की है। जनजातीय आबादी के संपूर्ण विकास के मकसद से किए गए सारे कार्य और परियोजनाएं बेहतर ढंग से आगे बढ़ रही हैं।

5. डॉ. सगदेव के काम को समाज के अलग-अलग वर्गों द्वारा सराहा गया है। उन्हें आईएमए, रोटरी क्लब, लॉयन्स क्लब, जेकीस और कई दूसरे संगठनों द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए हैं। उनके निःस्वार्थ और उत्कृष्ट कार्यों के लिए उन्हें स्थानीय और राष्ट्रीय अखबारों और पत्रिकाओं में भी प्रमुखता मिली है।